मधुबन ओम् शान्ति अंक 326 सितम्बर 2019

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(13-08-19)

प्राणप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी स्थिति में रह ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण के तीव्र पुरुषार्थी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सब रक्षाबंधन और जन्माष्टमी के पावन त्योहारों पर बहुत ही उमंग-उत्साह से सेवायें करते, अनेक आत्माओं को आने वाली स्वर्णिम दुनिया का सन्देश दे रहे हो। सबको बेहद सेवाओं के साथ-साथ मन-वचन-कर्म से सम्पूर्ण पावन बनने और बनाने की दृढ़ प्रतिज्ञा करने की बधाई हो। यह प्रतिज्ञा ही हम सबको कर्मेन्द्रिय जीत, मोहजीत, विकर्माजीत और कर्मातीत बनायेगी। संगम की यह घड़ियां हैं ही सदा अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलने की। अतीन्द्रिय सुख माना कर्मेन्द्रियां बहुतकाल से हमारे ऑर्डर में चलने वाली हों। जो आये सो खायें, जो आये सो चलें, नहीं। हमारे सब कर्म एक्यूरेट हों, टाइम पर हों, हमारी चलन-चेहरे में धीरज हो। धीरज से हर पुरुषार्थ में सफलता मिलती है। मेहनत नहीं है, परन्तु मोहब्बत में बहुत सुख मिलता है। उस सुख में शान्ति भी है, प्रेम भी है, खुशी भी है और उसमें पवित्रता तो नम्बरवन है। प्यूरिटी ही हमको रॉयल्टी में ले आती है। रीयल्टी में कभी भूल से भी अशुद्ध संकल्प न आयें, ऐसा अपने ऊपर अटेन्शन होना चाहिए। कोई भी घड़ी, कोई भी मिनट, हम यह नहीं कहेंगे कि अभी मेरा मन शान्त नहीं है। मन अभी दूसरे की सुन नहीं सकता। समय अनुसार अब अपनी कैचिंग पॉवर, टचिंग पॉवर ऐसी हो जो बाबा के हर इशारे को कैच कर सकें, इसके लिए शान्त होकरके बैठो। अशान्ति आने का दरवाजा बन्द हो। बुद्धि को सिर्फ बाप के संग का रंग लग जाने दो।

हमारा सहजयोग, राजयोग है इसलिए कभी हम यह नहीं सकते कि यह चाहिए, यह चाहिए ... क्योंकि हम रॉयल हैं। रॉयल पर्सनालिटी वाला कभी यह नहीं कहेगा कि मुझे यह चाहिए, इसके लिए अपने मन को कन्ट्रोल में और ऑर्डर में रखना है। बाबा कहता है बच्चे सतयुग में जाना है तो अच्छे कर्मों पर ध्यान दो। लेकिन सतयुग में जाने के पहले हमें तो अपने घर मुक्तिधाम, शान्तिधाम में जाना है। उसके लिए निर्वाण अर्थात् वाणी से परे रहना है, देह के सम्बन्धों से न्यारा बनना है। कोई में भी अटैचमेन्ट न हो, अटेन्शन प्लीज़।

हमारी लाइफ इतनी लाइट (हल्की) हो, जो हर कार्य करते खुद को खुदाई मस्ती यानी नशे में रख सकें। अभी खुद खुदा मेरा दोस्त है इसलिए अभी वह खुदाई मस्ती सदा चढ़ी रहे कि चलो वतन की ओर...। बुद्धि भटकना छोड़ दे। यह संगम का समय बड़ा बलवान है। इस समय जो बाबा कराता है, वही करना है। पढ़ाई की गहराई में जाओ तो सुख शान्ति प्रेम की गंगा बहती है। अन्दर दिल से निकलता है शुक्रिया बाबा.. बाबा के महावाक्यों का अगर सिमरण करते हैं, उसकी स्मृति में रहते हैं तो बाबा मेरा साथी और ड्रामा की नॉलेज से साक्षी होकरके पार्ट बजाते हैं।

बाकी मैं तो ठीक हूँ, ठीक हूँ, ठीक हूँ.. ऐसे करके चल रही हूँ। आप सब देख रहे हो ना, कैसे चल रही हूँ! सारे विश्व में जहाँ भी पांव रखा होगा वहाँ बाबा मेरे साथ होता है। हम सबको बाबा की सकाश मिल रही है तब तो शान्ति का, प्रेम का, शक्ति का अनुभव होता है। दिल में बाबा, दिमाग में बाबा की मुरली, दृष्टि में मीठा बाबा, प्यारा बाबा सदा इसी खुशी में रहने की शक्ति बाबा ने दी है। बाबा कहते बच्चे, खुश रहो आबाद रहो कभी बाबा को भूलो नहीं। मैं खुशनसीब हूँ, जो बाबा के और आप सबके इतना करीब हूँ। बाबा की दृष्टि महासुखकारी है जो हम सबको चला रही है।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"भिन्न-भिन्न विधियों से पुराने संस्कारों का परिवर्तन करो"

1) यह ब्राह्मण जन्म मरजीवा जन्म है। मरजीवा बनना अर्थात् अपनी देह से, मित्र सम्बन्धियों से, पुरानी दुनिया से मर जाना। जैसे कोई मर जाता है तो पिछले संस्कार खत्म हो जाते हैं। तो यहाँ भी पिछले पुराने संस्कार ऐसे लगने चाहिए जैसे और कोई के थे, हमारे नहीं। जैसे ब्राह्मण गन्दी चीज़ को नहीं छूते हैं वैसे पुराने संस्कारों से बचना है, उन्हें छूना भी नहीं है।

2) देह की आकर्षण के संस्कार जो न चाहते हुए भी खींच लेते हैं, उन् संस्कार को परिवर्तन करने के लिए मुख्य दो बातों का ध्यान रखो: 1- हर एक के चरित्र को देखो, दूसरा-चैतन्य (विचित्र-आत्मा) को देखो।

3) अन्दर में जो भी पुराने संस्कार स्वभाव का किचड़ा है, उसे परिवर्तन करने के लिए सच्चाई और सफाई का गुण धारण करो। मन्सा-वाचा-कर्मणा तीनों में बनावटी रूप न हो। सच्चाई अर्थात् जो करें, जो सोचें वही वर्णन करें। ऐसा जो सच्चा होगा वह सबका प्रिय होगा। सच्चे पर साहेब राज़ी होता है।

4) पुराने संस्कार तो मोटी चीज़ हैं अब पुराने संकल्प भी खत्म होने चाहिए। पुराने संस्कार उत्पन्न होने का कारण है विस्मृति। अपनी विस्मृति के कारण व्यर्थ बातें सहज को मुश्किल बना देती हैं। कोई न कोई संस्कारों में अगर यह देह का वस्त्र चिपका हुआ है अर्थात् तंग है, टाइट है, तो उतर नहीं सकता। जब सभी संस्कारों से न्यारे हो जायेंगे तो फिर अवस्था भी न्यारी-प्यारी फरिश्ता समान हो जायेगी।

5) ब्राह्मण जीवन में कोई भी बात मुश्किल नहीं है, लेकिन अपने संस्कार, अपनी कमजोरियां मुश्किल के रूप में देखने में आती हैं। इसके लिए अपने को शमा पर इतने तक मिटाना है जो कहते हो ''मेरे संस्कार'' यह मेरापन भी मिट जाये। नेचर भी बदल जाये। जब हरेक की नेचर बदलेगी तब ब्रह्मा बाप समान अव्यक्ति पिक्चर्स बनेंगे।

6) जो भी पुराने संस्कार हैं और पुरानी नेचर है वह बदल कर ईश्वरीय नेचर बनाओ। कोई भी पुराना संस्कार, पुरानी आदतें न रहें। आपके परिवर्तन से अनेक लोग सन्तुष्ट होंगे। सदैव यही कोशिश करो कि हमारी चलन द्वारा कोई को भी दु:ख न हो। मेरी चलन, संकल्प, वाणी, हर कर्म सुखदाई हो - यह है ब्राह्मण कुल की रीति।

7) जो बहुत समय के संस्कार होते हैं वही अन्त की स्थिति रहती है। लौकिक रीति से जब कोई शरीर छोड़ते हैं, अगर कोई संस्कार दृढ़ होता है, खान-पान वा पहनने आदि का तो पिछाड़ी समय भी वह संस्कार सामने आता है इसलिए अभी से ये विस्मृति के अथवा हार खाने के संस्कार मिट जाने चाहिए। इसके लिए अपने आप से दृढ़ प्रतिज्ञा करो कि यह संस्कार, यह व्यर्थ संकल्प कभी भी उत्पन्न नहीं होने देंगे। जब ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा करेंगे तब अन्त में विजयी बनेंगे।

8) पुराने संस्कार, व्यर्थ संकल्प वा विकल्प के रूप में जब इमर्ज होते हैं तब बुद्धि में एक ही शब्द आता है कि यह क्यों हुआ, क्यों से व्यर्थ संकल्पों की क्यु शुरू हो जाती है। इस क्यु की समाप्ति के बाद ही सम्पूर्णता आयेगी फिर वह क्यू लगेगी। जब क्यों शब्द निकल जायेगा तब ड्रामा की भावी पर एकरस स्थेरियम रहेंगे।

9) जो अपने संस्कार बापदादा के समान नहीं हैं, उन्हें बिल्कुल टच नहीं करो। देह और देह के सम्बन्ध यह सीढ़ी तो चढ़ चुके अब बुद्धि में भी पुराने संस्कार इमर्ज न हों क्योंकि जैसे संस्कार होंगे वैसा स्वरूप होगा। तो जैसे बापदादा के गुण हैं, वैसे हूबहू वही गुण, वही कर्तव्य, वही बोल, वही संकल्प होने चाहिए फिर सभी के मुख से निकलेगा कि यह तो वही लगते हैं।

10) पुरानी बातें, पुराने संस्कार ऐसे अनुभव हों जैसे कि नामालूम कब की पुरानी बात है। ऐसे नाम निशान खत्म हो जाये। इसके लिए 1- अपनी बुद्धि से उपराम 2- संस्कारों से भी उपराम। ''मेरे संस्कार हैं-'' इस मेरे-पन से भी उपराम। मैं यह समझती हूँ, इस मैं पन से भी उपराम। जहाँ मैं शब्द आता है वहाँ बापदादा याद आये। जहाँ मेरी समझ आती है वहाँ श्रीमत याद आये।

11) जैसे साकार रूप के संस्कार ''उपराम और साक्षी दृष्टा'' के थे। यही साकार के सम्पूर्ण स्थिति के श्रेष्ठ लक्षण थे। इन संस्कारों में समानता लानी है। इन गुणों से सर्व के दिलों पर विजयी बनेंगे। जो संगम पर सर्व के दिलों पर विजयी बनता है वही भविष्य में विश्व महाराजन् बनते हैं।

12) प्लैन और प्रैक्टिकल को समान बनाने के लिए स्मृति में प्लेन, वाणी में भी प्लेन और कर्म में भी प्लेन अर्थात् श्रेष्ठता हो। कोई भी पुराने संस्कार का कहाँ दाग न हो। जब ऐसे प्लेन हो जायेंगे तब प्लैन और प्रैक्टिकल एक हो जायेंगे। फिर सफलता एरोप्लेन की मुआफ़िक उड़ेगी।

13) कई बच्चे जब पुरुषार्थ नहीं कर पाते हैं तब नेचर पर दोष रखते हैं, कहते हैं हमारी नेचर ऐसी है। लेकिन नहीं। आप

लोगों का तो कर्तव्य ही है नेचर क्योर करना। वह नेचर क्योर वाले फास्ट रखाते हैं। ऐसे आप बच्चे भी पुरुषार्थ में जो नुकसानकारक बातें हैं उनका फास्ट रखो और प्रतिज्ञा करो कि यह करके ही छोडूंगा। बन कर ही छोडूंगा, जब इतना निश्चयबुद्धि बनेंगे तब विजयी बनेंगे।

14) सर्व का सहयोगी बनने के लिए अपने पुराने संस्कारों को मिटाना पड़ता है, जब अपने संस्कार मिटायेंगे तो दूसरे आपको स्वयं ही फालो करेंगे। एक हम, दूसरा बाप। तीसरी बातें देखने में आयेंगी लेकिन देखते हुए भी न देखो, अपने को और बाप को देखो। स्लोगन यही याद रखो - कि ''स्वयं को मिटायेंगे लेकिन सर्व के सहयोगी बनेंगे।''

15) जैसे वह बहुत पहले के साउन्ड को कैच करते हैं, वैसे आप अपने 5000 वर्ष पहले के दैवी संस्कार कैच करो। सदैव यह स्मृति में रखो कि मैं यही था और फिर बन रहा हूँ। जितना-जितना आदि और अनादि पवित्र संस्कारों को कैच कर सकेंगे उतना उसका स्वरूप बन सकेंगे।

16) आपस में दिलों के मिलन से संस्कारों को मिलाना है। इसके लिए कुछ मिटाना पड़ेगा, कुछ भुलाना पड़ेगा, कुछ समाना पड़ेगा – तब यह संस्कार मिल जायेंगे। यह है अन्तिम सिद्धि का स्वरूप। जब एक अनेकों को सम्पूर्ण संस्कार वाले बना दो, सभी के संस्कारों में बापदादा के संस्कार देखने में आयें तब प्रत्यक्षता के नगाड़े बजेंगे और समाप्ति होगी।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 14-02-15 *मधुबन*

"पढ़ाई के साथ हमारी कमाई है, हमें चारों सबजेक्ट में नम्बरवन लेना है"

दादी जानकी जी

सभी आवाज़ से ओम् शान्ति बोलो। आज सभी से मिलने के लिए खींच हो रही थी। बाबा कहता है मैं खींचता हूँ, हम चले वतन की ओर, खींच रहा कोई डाल के प्रेम की डोर। बाबा बहुत होशियार है, हम चाहें कुछ नहीं भी करें, बाबा को जो कराना है वह करा लेता है। बाबा की याद दिलाने के लिए यह कितना अच्छा संगठन है। इतने बड़े संगठन को देख, सामने बाबा को देखते फिर इतने विशाल परिवार को देखते, कितना अच्छा लगता है। अगर मैं आत्मा थोड़ा देह-अभिमान में होती तो यहाँ हाज़िर नहीं हो सकती थी। 3 बारी ओम् शान्ति कहने का मतलब ही यह है एक अपने को आत्मा समझो। मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ। फिर परमात्मा एक है, वो निराकार है उसने इनके द्वारा निर्विकारी, निरंहकारी बना लिया। फिर ज्ञान, योग, धारणा और सेवा नम्बरवार सबजेक्ट हैं। पढ़ाई इतनी अच्छी है, बाबा भी अच्छा है तो पढ़ाई भी बहुत अच्छी है। पढ़ाई में कमाई भी बहुत है। लौकिक में पढ़ाई के बाद कमाई शुरू हो जाती है। यहाँ पढ़ाई के साथ-साथ कमाई है। सुबह याद में रहना, शान्त में रहना फिर मुरली सुनना या पढ़ना माना कमाई करना है। ज्ञान रत्नों से खेलना है। पढ़ाई हमारी ऐसी है, ज्ञान योग के साथ धारणा अच्छी है तो बाबा को मुँह दिखा सकते हैं। चेहरा और चलन धारणा से पता चल जाता है। जैसा कर्म मैं करेंगी मेरे को देख और करेंगे।

कर्म बड़े बलवान हैं, बाबा सर्वशक्तिवान है। बाबा शक्ति आत्माओं को देता है, क्योंकि बच्चे हैं ना। वर्से में शक्ति देता है। स्टूडेन्ट हूँ, अच्छा पढ़ती हूँ तो शिक्षक है। उसकी शिक्षायें बहुत अच्छी हैं। उनकी शिक्षाओं को याद नहीं करना पड़ता है पर उनकी शिक्षायें हमारा श्रृंगार करती हैं। ज्ञान स्नान है, धारणा श्रृंगार है, तो सब श्रृंगारे हुए हैं। भले बाल काले हैं, सफेद हैं पर कपड़े तो सफेद हैं। भले बहुतों के बाल काले काले हैं लेकिन श्रृंगार वाले बाल नहीं हैं, सिम्पुल हैं। सफेद कपड़े हैं, कोई भी रंगीन कपड़े वाला नहीं बैठा है। दिल कहता है सच्चाई, सफाई और सादगी हो तो वन्डर है, बाबा ने जो सिखाया है जो श्रीमत मिली है, उसी पर चलना है, मनमत परमत किसकी भी यहाँ नहीं चलती है। सतगुरू की श्रीमत पर सतयुग की स्थापना हो रही है। अभी संगमयुग पर जो अनुभव हो रहा है वो सतयुग में मिस करेंगे। वहाँ यह नहीं होगा पर अभी संगम पर सतयुगी स्थापना का अनुभव हो रहा है।

अभी कोई बड़ी बात नहीं है क्योंकि या है बाप या है बात इसलिए हमारे लिए कोई बात नहीं है क्योंकि बाबा जो बैठा है। अच्छा है, सभी खुश-राज़ी है! जो खुश-राज़ी नहीं है हाथ उठाओ। जो कोई नाराज़ होते हैं तो खुशी में रहना मुश्किल लगता है, जो राज़ी रहता है वो सदा ही मुस्कराता है, कोई बात मुश्किल नहीं है। राज़ी रहना खुश रहना और क्या रहना?

अन्तर्मन से दिल से खुश, मन से शान्त, बुद्धि से चिंता नहीं करो, चिंतन में राम ले करके अच्छा चिंतन करो तो चिंता मिट जायेगी। राम कौन है? जो रोम रोम में बसता है, हमारे रोम-रोम में क्या है? खुशी, शान्ति, बाबा का प्यार, हमारा आपस में प्रेम है।

अभी 40 साल विश्व सेवा हुई, बाबा ने कराई है। सबके दिलों में दिलाराम बैठ गया है, पहले तो सबके दिलों के टुकड़े टुकड़े हो गये थे। दिलाराम बाबा वन्डरफुल है। हमारे अन्दर नेचुरल मैं मेरा के सिवाए कुछ बात नहीं है।

याद में रहना माना अन्तर्मन शान्त, तन शीतल ऐसी दुनिया बनानी है। कौन मिला है, इस खुशी में नाचो, पता चलता है कौन मिला है! ऐसा मिलन कल्प कल्प होगा इसलिए बहुत खुश हूँ। कल्प पहले भी हुआ था, ब्रह्माबाबा ने अन्तिम जन्म में शिवबाबा को अपना बनाया। हम भी 84 जन्म ब्रह्माबाबा के साथ पूज्य पुजारी के पार्ट में साथ होंगे। पर उसके पहले बनना है माननीय योग्य फिर बनना है गायन योग्य। लगे कि इसका जो चेहरा और चलन है, अच्छी है परन्तु उनसे श्रेष्ठ पूज्यनीय बनना है तो अभी अपने से पूछना है मैं कहाँ तक कौन-सी स्थिति में रहती हूँ? बाबा ने कैसे अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया, यह गीत मुझे बहुत अच्छा लगता है। बाबा ने खुद गीत की इस लाइन से मेरी स्थिति को देखा और प्यार किया है। यह मैं खुशी की बात सुनाती हूँ, प्रेम के भी आँसू नहीं आते हैं क्योंकि एक बारी बाबा ने कहा था कि कभी दु:ख के आँसू तो नहीं आवें पर प्रेम के भी आँसू क्यों बहें! प्रेम के आँसू बहते नहीं हैं, दु:ख के पोछने पड़ते हैं। तो कभी भी ऐसे आँसू न बहायें।

बाबा मुरली मधुबन यह तीन बातें जिसके दिल में, मन में और प्रैक्टिकल हैं। दिल में है मुरली, रहते हैं मधुबन में और यह दोनों स्थान ज्ञान रत्नों से मालामाल कर देते हैं। किसने किया है? बाप, शिक्षक, सतगुरू ने। बाकी मेरा संकल्प कोई नहीं चलता है लेकिन बाबा को बाबा कहना, मुझे ऐसे लगता था भगवान मैं बाबा बाबा कैसे कहती हूँ। यह तो भगवान है ना! तो दीदी ने कहा सखा बना दो। उस दिन से ले करके बाबा मेरा सखा भी है, तो साजन भी है। कितनी भाग्यवान हूँ सर्व सम्बन्ध बाबा के साथ हैं, फिर सारे कल्प में यह नहीं होगा। लक्ष्मी-नारायण भी जो जन्म लेंगे, लक्ष्मी पहले राधे होगी, नारायण पहले कृष्ण होगा। उनके माँ बाप अलग-अलग होंगे परन्तु अभी जो लक्ष्य रखा है, माँ बाप सखा स्वामी सतगुरू सब कुछ वह एक ही है। तो मैंने विदेश मे देखा कम्पैनियन ऑफ गॉड का बुक अनेकों भाषाओं में अनुवाद करके छपवाया है। बाबा को कम्पैनियन बनाना वन्डरफुल है। सारे विश्व में बाबा ने कैसे सेवा कराने के निमित्त बनाया है। कल्प पहले जैसे मिलना हुआ था अभी मिले, बाकी एक बात सुनाती हूँ बीती को चितवो नहीं, आगे की रखो न आश। जो हो रहा है अच्छा है, जो हो गया अच्छा हुआ...।

तो ज्ञानयुक्त, योगयुक्त, राज़युक्त, स्नेहयुक्त, सब युक्त... युक्त शब्द को इंगलिश में एक्यूरेट कहेंगे। जब एक्यूरेट बोलते हैं तो यह दृढ़ संकल्प है। एक्यूरेट, आलराउण्डर, एवररेडी। आप सबसे मिलने में सबसे पहली खुशी मेरे को हुई। मैंने कहा जरुर सबसे मिलना है।

अभी यहाँ साकार में इतने खर्चे हैं, बाबा कहते बच्चे दिल खुली रखो पर फालतू खर्चा एक पेनी भी नहीं करना। आपस में मिलन मनाना, नियम मर्यादा और बाकी दो बातें और हैं। ईश्वरीय स्नेह के सहयोग से सारी विश्व की सेवा बाबा ने कराई है। की बाबा ने है, करावनहार बाबा है। करने वाले निमित्त हैं। उसमें कोई कोई बात रिपीट भी होती है। निमित्त बनने वालों में 5 बातें होनी चाहिए। बेहद पवित्रता, कोई भी हद है देह, देह के सम्बन्ध या कोई भी बात की हद है तो हद कभी भी हमको मर्यादा पर चलने नहीं देगी इसलिए पहले है पवित्रता फिर सत्यता, धैर्यता, नम्रता, मधुरता। बाबा ने लेटेस्ट मुरलियों में कहा है यहाँ सत का संग मिला है, उसका रंग लग गया है। भक्ति में सत्संग करने की हॉबी थी तो आपस में मिलके कुछ गाना गाना या शान्त में बैठके माला फेरना। माला के मणके का सिमरण करते थे। परमात्मा का बनने से वैजयंती माला में आ गये। इस सभा में कौन है जो वैजयंती माला में आयेंगे, हाथ उठाओ। यह तो 108 से भी ज्यादा हैं, हॉल में 17 हजार भाई बहनें बैठे हुए हैं। राजाओं का राजा भी बनेंगे, 8 में आने वाले परन्तु उसके पहले अभी 9 लाख की माला भी तैयार हो गई है। तो अब सब काम हो गया। तो अब घर जाना है, घर जाना है, घर जाना है... यह गीत बहुत अच्छा है। अब घर जाने के लिए तैयार बैठे हैं, क्योंकि बाबा अकेला कैसे जायेगा? ब्रह्माबाबा के साथ सारी बारात भी जायेगी।

तो ब्रह्माबाबा ने जो सिखाया है, श्रीमत क्या होती है, कैसे चलना होता है उस श्रीमत को पालन करने वाली हमको श्रेष्ठ आत्मा बनना है। तो वन्डरफुल बाबा, वन्डरफुल ड्रामा, वन्डरफुल बाबा के बोल। जैसे गुल्जार दादी माना बाबा का रथ, वैसे जनक माना विदेही रहना और ट्रस्टी रहना। ट्रस्टी में ऐसे ट्रस्ट रखा जाए, सदा ही एक दो में ट्रस्ट हो। ऐसी मेरी दिल सच्ची हो साफ हो तो आज के वेलेंटाइन डे पर मुझे कोई ने आई लव यू कहके कार्ड दिया। दूसरा किसी ने कहा I Love You ऐसा कहना चाहिए, यहाँ है सच्ची दिल की बात। अहम् आत्मा, बाप परमात्मा से हमारा सर्व सम्बन्ध है। ओम् शान्ति।

दूसरा क्लास

“कार्य व्यवहार में रहते जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव अभी करना है, अपना समय, श्वांस संकल्प सब सफल करना है”

सभी एक बाबा के साथ सर्व सम्बन्ध का अनुभव कर रहे हो ना। यह एक ही शक्ति सर्व कमजोरियों को खत्म करने वाली है। एक है पीस, दूसरी है साइलेंस। पीस का अनुभव करना हो तो जैसे साइंस ने कमाल कर दिया है। साइलेंस और साइंस अभी दोनों इंगलिश शब्द हैं। साइलेंस माना अन्दर डीप जाना, साइंस से निमित्त मात्र काम लेना। 5 तत्वों की दुनिया में रहते हुए जाना है अपने घर, जहाँ सूर्य चन्द्रमा की रोशनी भी नहीं। वन्डर है बाबा ने साइलेंस में घर जाने का रास्ता भी दिखाया है, घर कैसा है, वह अनुभव भी कराया है। तो खैंच हुई, सुना कि 1000 फॉरेनर्स भाई बहनें यहाँ ज्ञानसरोवर हॉर्मनी हॉल में बैठे हैं। तो आप सबसे मिलन मनाने के लिए आई हूँ।

सुना है आप सभी ने इस बार शिवजयन्ती पर अपने अपने स्थानों पर भी शिव बाबा का झण्डा फहराया है। आज की मुरली में भी बाबा ने शिवजयंती की बहुत-बहुत मुबारक दी है। बाप की जयंती सो हम बच्चों की जयंती। अगर हमारी न होती, तो बाप उसको कौन कहता, हमने जाना है, पहचाना है उसको पाया है, वो हमारा है हम उनके हैं, वन्डरफुल बाबा है।

20 दिन लण्डन चक्कर लगाकर यहाँ की महफिल में भी टाइम पर पहुँच गई। कल शाम को शान्तिवन 17 हजार लोग थे उनसे भी मिली। जैसे बाबा करनकरावनहार यह बहुत अच्छा अनुभव कराता है। हिम्मत के साथ उमंग-उत्साह भी हो। परन्तु या लेकिन... यह शब्द नहीं बोलो। वाह बाबा वाह बोलो। वाह संगमयुग वाह बोलो। व्हाई व्हाई कभी नहीं कहो, यह भूल कभी नहीं करो। यह क्यों हुआ? यह क्या हुआ? कैसे होगा? कौन करेगा? कब होगा? यह कै कै कै कौवे वाली नहीं करो। बाबा कहते हैं अपनी भाषा ऐसी बोलो जो भावना, भाव और भाषा समान हो। आज थर्ड सण्डे है तो मैं नहीं समझती हूँ यह नियम कोई मिस करता होगा। नियम मर्यादाओं अनुसार प्यूरिटी और पॉवर्स से हम आगे पास विथ ऑनर में आ रहे हैं। हम ऐसे ही टाइम पास नहीं कर रहे हैं पर समय, श्वांस, संकल्प सफल कर रहे हैं। तन मन धन से समर्पण लाइफ है। लाइफ में मन्सा वाचा कर्मणा तीनों ही श्रेष्ठ हो, प्रैक्टिकल हो।

शिवबाबा बच्चा भी नहीं बनता है, बुढ़ा भी नहीं बनता है। ऐसे बाबा का बनने से बहुत सुख मिलता है। जीवनमुक्ति का अनुभव यहाँ अभी करके मुक्तिधाम जायेंगे, फिर सुखधाम में आयेंगे। जैसे हम आयेंगे वैसे और कोई नहीं आयेंगे। तो इस खुशी में मुक्तिधाम और जीवनमुक्तिधाम का अनुभव अभी मिला है। मुक्ति माना कोई बन्धन नहीं है, सब बन्धनमुक्त है। कार्य-व्यवहार में रहते भी जीवनमुक्त हैं, यह कितनी खुशी की बात है! जीवनमुक्ति जैसे अभी वर्से में है। बाबा के साथ रहते हैं तो बाबा मेरा साथी, मैं हूँ साक्षी। ड्रामा में साक्षी हो करके प्ले करना, यह है प्यूरिटी रॉयल्टी। समझा। अभी सबको साक्षी हो करके देख रहे हैं, आपके सामने सब भाषाओं वाले बैठे हैं। ओम् शान्ति।

तीसरा क्लास

“त्याग, तपस्या और सेवा के फल स्वरूप न्यारे और प्यारे बनो”

ओम् शान्ति, वाह मेरा बाबा वाह! वाह मेरा मीठा बाबा वाह! कमाल करने वाला बाबा मेरा, जो कोई नहीं कर सकता है वही भगवान ने किया है। हम कदम कदम पर अपना भाग्य बनाने वाले हैं। अन्दर भावना यह है, तो बाबा हमारी वृत्ति को देखते हैं। आप हमारी महिमा नहीं करो, यह ऐसा योग्य बनाने के लिए अथक सेवाधारी रहूँ। त्याग तपस्या सेवा के फल-स्वरूप डिटैच और लविंग, जरा भी त्याग वृत्ति न हो तो गाड़ी आगे नहीं चलती है। तपस्या न हो तो विकर्म विनाशक नहीं हो सकते हैं। ऑटोमेटिक त्याग वृत्ति तपस्या मूर्त सेवा में हाज़िर रखा है। अभी तो कोई सेवा है ही नहीं। तन मन धन तो है ही

नहीं। जहाँ मेरा तन होगा वहाँ मेरा मन होगा। जहाँ मेरा मन होगा वहाँ मेरा तन होगा। तो हरेक अपना चेक करे, मन कहाँ - तन में है? धन में है? मनमनाभव। मेरे बाबा ने सिखाया है, उसमें यह मुख्य फायदा है।

बाबा कहना माना लाइट में जाना और लवली बनना। ऐसे लवली बनो जो लवलीन हो जाओ। ऐसे अनासक्त वृत्ति, नष्टोमोहा, विदेही और ट्रस्टी बनो। अन्दर आत्म अभिमानी निश्चय बुद्धि स्थिति से विश्वास है तो कहेंगे ट्रस्ट है फिर कोई बात असम्भव नहीं है, यह मैंने देखा। इनकी भावना से सत्यता और नम्रता के लिए सबको वैल्यु है। अन्दर में सत्यता और सम्बन्ध में नम्रता हो तो बहुत सहज है, मेहनत नहीं है। बाबा कहते हैं मेहनत से पुरुषार्थ नहीं करो, मोहब्बत से पुरुषार्थ करो। यह सब मोहब्बत का खेल देख रहे हैं। वर्ल्ड स्टेज है, जहाँ पार्ट बजा रहे हैं।

हम त्रिलोकीनाथ हैं। स्थूल सूक्ष्म मूलवतन के पास रहते हैं, सूक्ष्मवासी भी अव्यक्त है, कर्मातीत है, ऐसी स्थिति में रहने के लिए, मूलवतन में भी कोई आवाज नहीं है। सूक्ष्मवतन में आवाज भले नहीं है, पर वायब्रेशन बहुत अच्छे हैं। तो त्रिलोकीनाथ रहना, त्रिनेत्री, स्वदर्शन चक्रधारी बन स्वदर्शन चक्र फिराते रहो, प्रेम की गंगा बहाते चलो। ओम् शान्ति।

दादी गुल्जार जी के साथ डबल विदेशी भाई-बहनों के प्रश्न-उत्तर

(गुल्जार दादी जी का क्लास)

प्रश्न: दादी पिछले 10 वर्षों में आतंकवाद और हिंसा की घटनायें तेजी से लगातार बढ़ रही है, ऐसी घटनाओं के समय हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर: 1936 से बाबा हमें बता रहे हैं कि विश्व में क्या-क्या होने वाला है! उस समय यह सब पर्दे के पीछे छिपा था लेकिन वही सब चीजें अब स्पष्ट हो रही हैं। शुरू के दिनों में शिवबाबा ने हमें ब्रह्मामुख से बतलाया था कि ऐसा समय आयेगा जब कि हम में से हर एक को विश्व-कल्याणकारी का पार्ट बजाना पड़ेगा। इसके लिये पहले 14 वर्ष बाबा ने हमें एक भट्टी में रखा जिससे कि हम सही वायब्रेशन्स दे सकें। वर्तमान की जो भी घटनायें है वह हमारे सामने स्पष्ट हैं वह हमें यह इशारा दे रही हैं कि अब ड्रामा पूरा हो रहा है। और बाबा ने हमें बतलाया हुआ है क्योंकि विश्व की आबादी बहुत बढ़ गई है इसलिये हर आत्मा को व्यक्तिगत रूप से ईश्वरीय ज्ञान नहीं दे सकते हैं परन्तु जो कुछ हम कर सकते हैं वह अपने व्यवहार, चलन और विचारों की शक्ति द्वारा ही कर सकते हैं। श्रेष्ठ संकल्पों द्वारा एक शान्ति का, स्नेह का वातावरण फैला सकते हैं। अभी तो हर जगह आंतक का वातावरण फैला हुआ है। इसमें हमें जो कुछ करना है वह बाबा के साथ बुद्धियोग लगाकर सब जगह शान्ति के वायब्रेशन फैलाने हैं।

प्रश्न: जब इस तरह की ऐसी कोई घटना वा हिंसा हमारे सेन्टर या हमारे घर के नजदीक ही कहीं घटती है तो उस समय हमें क्या केवल वायब्रेशन से ही उनकी सेवा करनी है या और कोई स्थूल रूप से भी सेवा करने का प्रयास करना चाहिए?

उत्तर : बाबा कहते हैं कि हम एक ही समय तीन प्रकार की सेवा कर सकते हैं। जैसे मन्सा सेवा, वाचा द्वारा ज्ञान देकर और विवेक (विज़डम) या कर्मणा से भी। यथा समय जैसे सहयोग की आवश्यकता हो वैसा सहयोग करना चाहिए।

प्रश्न: जब ऐसी आंतक और हिंसा की घटना घटती है तब हम सुनते हैं कि ब्राह्मण आत्मायें घटना स्थल के नज़दीक होते भी सेफ्टी से बाहर निकल आते हैं और बच जाते हैं, तो दादी हमें यह बताएं कि ब्राह्मण आत्माओं को बाबा कैसे बचाता है?

उत्तर : बाबा ने हमेशा बताया है कि किसी ऐसी दुर्घटना के समय बाबा हमारी छत्रछाया बन जाते हैं। वास्तव में बाबा हर बच्चे के प्रति रहमदिल है और सर्व आत्माओं का रक्षक है, किन्तु इसके लिये उनकी बुद्धि की लाइन शुद्ध और क्लीयर होनी चाहिए इसमें ब्राह्मण और नॉन ब्राह्मण आत्मा का कोई अन्तर नहीं होता है। परन्तु ऐसे में इस बात की आवश्यकता होती है कि जितनी आपकी बुद्धि की लाइन क्लीयर होगी उतने ही सहज आपको क्या करना है, उसका यथार्थ निर्णय ले सकेंगे। परमात्मा अपने बच्चों को बचाने के लिए कोई-न-कोई रास्ता निकालता अवश्य है। उनकी श्रीमत है कि हम सदा एवररेडी रहें, एवररेडी इस भाव से कि आप ने अपने अन्दर सर्व ईश्वरीय शक्तियाँ भर ली हैं। यह शक्तियाँ ही आपको एवररेडी बनने में मदद करेंगी। जैसे जब हम ब्राह्मण जीवन में आगे बढ़ते हैं तो माया भी अधिक शक्तिशाली बनकर

हमें हराने का प्रयत्न करती है। ऐसे समय हमें सर्वशक्तियों से सुसज्जित रहना है अर्थात् मास्टर सर्वशक्तिवान बनकर उसी स्वमान के नशे में रहना है। यदि आप में सहनशक्ति है और समाने की शक्ति नहीं है तो माया आप पर उसी रूप से वार करेगी।

प्रश्न: विदेश में पिछले 9 वर्षों से 'समय की पुकार' नामक कार्यक्रम करते आ रहे हैं, आजकल संसार में लोग समय के बारे में बहुत सावधान हैं और ब्राह्मण आत्माएं भी विशेष रूप से अधिक सतर्क हैं, समय की सूचना का संकेत कई बातों से मिलता है जैसे समय का इशारा, हमारी स्व-स्थिति से, ब्राह्मण परिवार की स्थिति, ड्रामा तथा सेवा की गति। तो क्या दादी जी, आप इन सभी इशारों को देखती हैं या किसी एक विशेष इशारे को देखती हैं?

उत्तर: हमें सभी दृष्टिकोणों से देखना है, हमें अपनी स्व-स्थिति को भी देखना है, हमें अपने चारों और जो हो रहा है उसे भी देखना है। हमें ज्ञान का तीसरा नेत्र वा दिव्य बुद्धि मिली है जिसके द्वारा हम सभी दृष्टिकोणों से देख सकते हैं।

प्रश्न: दादी जी, वर्तमान समय आप क्या पुरूषार्थ कर रही हैं?

उत्तर: मैं विशेष ध्यान मन का राजा बनने का करती हूँ अर्थात् अपने मन को जिस स्थिति में जितनी देर स्थित करना चाहूँ, एक सेकण्ड में कर लूँ। मैं एकाग्रता की शक्ति एवं दृढ़ता की शक्तियों पर खास ध्यान देती हूँ।

प्रश्न: जैसे हरेक दादी का लोगों को प्रेरणा देने का अलग-अलग तरीका है, ऐसे ही दादी जी आपका देने का क्या तरीका है?

उत्तर: मीठी मम्मा ने उमंग-उत्साह के प्रेरणा की युक्ति सिखाई थी। कभी कोई ऐसी बात होती थी जिस विषय पर उन्हें किसी से बात करनी होती थी तो सबसे पहले उससे उसके गुण वा विशेषताओं का वर्णन करती थी कि वो कैसे अच्छी सेवायें कर रही है...। जिस विषय पर उसे ध्यान खिंचवाना होता या सावधानी देनी होती उस विषय पर उसका ध्यान खिंचवा देती थी कि यह करना या नहीं करना है।

तो सबका उमंग-उत्साह बढ़ाना या प्रेरणा देना, इसके लिए उनकी विशेषताओं की स्मृति दिलाना यही सबसे अच्छी युक्ति है। क्योंकि हर ब्राह्मण में महसूस करने की शक्ति तो होती ही है। वह कभी गलत भी कर सकते हैं, किन्तु वह उस भूल को शीघ्र ही महसूस कर लेते हैं।

प्रश्न: हम कहते हैं हमारे सर्व सम्बन्ध बाबा के साथ हैं, आप इसका अनुभव कैसे करती हैं? क्या सर्व सम्बन्धों का अलग-अलग अभ्यास करती हैं? आप सबसे ज्यादा रुह-रुहान किससे करती हैं? शिवबाबा या ब्रह्मा बाबा से...?

उत्तर: शिवबाबा ब्रह्माबाबा के बिना उत्तर किस प्रकार देंगे? बापदादा कम्बाइन्ड हैं इसलिए दोनों से साथ-साथ रूहरिहान करती हूँ। अमृतवेला लाइट और माइट लेकर लाइट हाउस बनने का विशेष समय है, उस समय मैं दोनों का आह्वान करती हूँ और अपने अनुभवों का विश्व के साथ लेन-देन करती हूँ। उसके पश्चात् दिन में जब जैसी आवश्यकता होती है उस रीति से बाबा का आह्वान करती हूँ। उदाहरण स्वरूप कुछ ऐसे विषय हैं जिस विषयों पर आप अपने माता-पिता से रूहरूहान नहीं करना चाहेंगे पर आप अपने मित्र से सहज रूप से वार्तालाप कर लेते हैं। जिस समय बाबा से जिस रूप की आवश्यकता होती है उस रूप से बाबा से रूहरिहान करती हूँ। यह केवल 15-20 मिनट की बात नहीं है, पर यह पूरे जीवन भर का वास्तविक सम्बन्ध है। बाबा वर्तमान समय हम सबके लिए आये हैं किन्तु मेरे लिये तो विशेष रूप से और यह मेरा अधिकार है। मैं हरदम यही सोचती हूँ कि बाबा मेरे लिए आये हैं और दिन-रात में चौबीस घण्टों में कभी भी मैं उनसे मिलन मना सकती हूँ।

प्रश्न: कृपया यह बतायें कि हम अपने कमजोरियों और शक्तियों को किस प्रकार अनुभव करें? क्या अपनी कमजोरियों के विषय में चिन्तन करना उचित है?

उत्तर : बाबा हमें महसूसता की शक्ति के बारे में बताते हैं कि किसी विषय को केवल जानना ही नहीं है परन्तु उसको अनुभव करना अधिक महत्वपूर्ण है। जैसे मैं जानती हूँ कि मैं एक आत्मा हूँ, ज्योति बिन्दु हूँ पर मैंने इसे कितना महसूस किया है और कितना अनुभव किया है? यह भी महत्वपूर्ण है कि मैं अपनी कमजोरियों को समझूँ और ध्यानपूर्वक देखूँ। परन्तु अपनी विशेषताओं के विषय में एकाग्रता से चिन्तन करना और उसके आधार पर आगे बढ़ते जाना यथार्थ पुरुषार्थ है। जब मैं इस प्रकार आगे बढ़ती जाती हूँ जैसे कि मैं उस समय लाइट के अन्दर हूँ तो मेरी कमजोरियाँ स्वत: मिट जायेंगी। बाबा बताते है दो प्रकार के बच्चे होते हैं एक बुद्धि वाले, एक दिल वाले। पहली श्रेणी वाले बुद्धि के आधार पर कार्य करते हैं और दूसरे दिल के आधार से। यदि ज्ञान केवल मेरे मस्तिष्क तक ही है तो मैं बहुत आगे नहीं जा सकती किन्तु वह मेरे दिल में है तो वह मेरे परिवर्तन और व्यवहार को प्रभावित करेगा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

“साक्षी स्थिति में रहो तो हर परिस्थिति में अचल-अडोल रहेंगे”

जैसे ड्रामा पर हम सदा ही अडोल रहते हैं। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह बहुत अच्छा है, जो होगा वह बहुत-बहुत अच्छा होगा। यह याद रहे तो हमारी स्थिति हर परिस्थिति में अडोल रहती है। दूसरों को भी देखते तो लगता इसका भी ड्रामा में यह पार्ट है, खेल है। उन सब खेलों को देख खिलाडी बन हमें साक्षी स्थिति में रहना है। किसी से भी नफरत वा घृणा नहीं है। सदा हर आत्मा के प्रति रहम, दया की भावना बनी रहे। हम कहते भी हैं शुभ भावना, सद्भावना तो चेक करें हमारी ऐसी भावनायें हैं? जिसको दूसरे शब्दों में कहते हैं शुभ दुआयें हैं? शुभ भावना माना ही शुभ दुआयें। तो प्वाइंट्स पर मनन करो और अपने आपको चेक करके अपना पेपर तैयार करो।

एक है वरदानी बनना, दूसरा है वरदानों से भरपूर होना। बाबा ने हमें जो भी सेवायें दी हैं यह ऊंची कमाई के लिए हैं। हमें इसका पूरा लाभ लेना है। हमारी अवस्था अच्छी है तो दूसरे को तीर सहज लग सकता है। हमारी अवस्था का दूसरे पर प्रभाव पड़ता है। जैसे दूध कितना स्वच्छ होता, उसमें जरा सा भी दही या निंबू का एक बूंद भी अगर डालो तो दूध फट जायेगा। तो वास्तव में हम आत्मायें भी इतनी ही स्वच्छ हैं, उसमें थोड़ा भी कोई दोष होता तो उसका असर अच्छी स्थिति पर फौरन पड़ता है। हम बहुत-बहुत स्वच्छ आत्मा हैं, हम दूध से भी प्युअर हैं। हमें किसी के संग के दोष में आना तो दूसरी बात है परन्तु संग का रंग टच भी नहीं हो। इसकी सबको बहुत सम्भाल रखनी है। बहुत करके अवस्थाओं पर अगर असर पड़ता है तो हमने देखा है मैजारिटी संगदोष के कारण। नाम ही है संग फिर दोष। एक संग ऊंचा भी बनाता और एक संग नीचे गिरा देता है। इसलिए संग की बहुत खबरदारी रखो क्योंकि उसका असर मन-बुद्धि पर बहुत पड़ता है।

बाबा कहते आप बच्चे सन्तुष्टता की खान हो क्योंकि बाबा ने हमें सर्व प्राप्तियाँ करा दी हैं ऐसी कोई प्राप्ति नहीं जो हम बाबा से कुछ मांगे। अप्राप्त नहीं कोई वस्तु। हर एक समझे कि मुझे व्यक्तिगत सन्तुष्टता का यह वरदान बाबा से मिला है।

मैं सन्तुष्टता की खान हूँ और खान से जितना भी कोई माल निकाले, वह दूसरों को भी दे तो वह भी सन्तुष्टता की खान से माल भरकर सन्तुष्ट हो जाए। इतना हम सन्तुष्ट रहें और अपनी सन्तुष्टता से दूसरों को भी सन्तुष्ट रखें। लक्ष्य रखो कि मुझे हर एक को 100 परसेन्ट सन्तुष्ट करना ही है। निगेटिव कभी नहीं सोचो। जब मन में कोई बात निगेटिव आती है तो आगे वाले को सन्तुष्ट नहीं कर सकते। फिर वह नाराज़ होगा। जब कोई नाराज़ होता है तो आपस में मतभेद होता। फिर आपस में शुभ भावना नहीं रहती। आज तुमने किसी को सन्तुष्ट नहीं किया तो कल वह भी नहीं करेगा। यह नेचुरल एक रिटर्न हो जाता है। फिर उससे मन भारी हो जाता फिर किसको सुनाऊं, क्या करूँ, जैसेकि कोई को हल नहीं मिलता और परेशान होते, परेशान होने से फिर माया के दूसरे-दूसरे संकल्प विकल्प चलते। और जब दूसरे संकल्प विकल्प चलते तो कोई ना कोई संग लग जाता। और कुछ नहीं होगा तो लौकिक याद आयेगा। फिर पुरानी दुनिया याद आयेगी।

इसलिए हर एक लक्ष्य रखे कि मुझे सन्तुष्ट रहना है और सबको सन्तुष्ट करना है। इसके लिए चाहिए त्याग। मुझे दूसरों को सन्तुष्ट करना है – यह करो दान। जो दूसरों को करेगा दान, उनको बाबा देगा वरदान। और वह वरदान फिर बन जाता है सन्तुष्टता की खान। तो दूसरों को सन्तुष्ट करने के लिए स्वयं को अपना त्याग करना पड़ता है। बाबा ने जो कहा है बेहद के वैरागी बनो, तो त्याग करने में ही वैराग्य है। कुछ भी छोटी मोटी बातें होती हैं, उनका भी त्याग करो। नहीं तो आपस में जो स्नेह-सहयोग चाहिए वह सब टूटता जाता है, तो सन्तुष्टता भी टूटती है क्योंकि मन मैला हो तो स्नेह भी टूटा फिर सहयोग भी नहीं मिला, तो काम भी नहीं हुआ। तो सन्तुष्टता टूट गयी लेकिन अगर हमारा लक्ष्य सन्तुष्ट करने का हो, हमें हर हालत में सबको सन्तुष्ट करना ही है। दूसरे की सन्तुष्टी में ही मैं सन्तुष्ट हूँ। यह लक्ष्य हो तो फिर आप देखो स्थिति आपकी कितनी ऊंची बन जाती है। जिसको कहते हैं कि अनासक्त होने से निरसंकल्प होते हैं। अच्छा।